बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी
(बी.ए.एच.डी.एच.)
सत्रांत परीक्षा
दिसम्बर, 2022

बी.एच.डी.सी.-104 : आधुनिक हिन्दी कविता (छायावाद तक)

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए । पहला प्रश्न **अनिवार्य** है ।*

1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं ***तीन*** की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) औरों के हाथों नहीं यहाँ पलती हूँ
अपने पैरों पर खड़ी आप चलती हूँ
श्रमवारि बिन्दु फल स्वास्थ्य मुक्ति फलती हूँ
अपने अंचल से व्यजन आप झलती हूँ
तनु-लता-सफलता-स्वादु आज ही लाया ।
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया ।

(ख) नदियाँ जहाँ सुधा की धारा बहा रही है
सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन-सा है ?

जिसके बड़े रसीले फल, कंद, नाज, मेवे,
सब अंग में सजे हैं, वह देश कौन-सा है ?

जिसके सुगंध वाले सुन्दर प्रसून प्यारे,
दिन-रात हँस रहे हैं, वह देश कौन-सा है ?

मैदान, गिरि, वनों में हरियालियाँ लहकतीं
आनंदपथ जहाँ हैं, वह देश कौन-सा है ?

(ग) कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय कर्मरत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार -
सामने तरु-मालिका अट्टालिका प्राकार ।

चढ़ रही थी धूप;
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप

(घ) खुले पलक, फैली सुवर्ण छवि,
खिली सुरभि, डोले मधु बाल,
स्पन्दन कम्पन औ' नव जीवन
सीखा जग ने अपनाना,
प्रथम रश्मि का आना, रंगिणि,
तूने कैसे पहचाना ?
कहाँ, कहाँ, हे बाल विहंगिनि ।
पाया यह स्वर्गिक गाना ?

(ङ) पल के मनके फेर पुजारी विश्व सो गया,
प्रतिध्वनि का इतिहास प्रस्तरों बीच खो गया
साँसों की समाधि सा जीवन,
मसि-सागर का पंथ गया बन
रुका मुखर कण-कण का स्पंदन,
इस ज्वाला में प्राण-रूप फिर से ढलने दो !

2. भारतेन्दु युगीन हिन्दी काव्य की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए । *16*

3. द्विवेदी युग के प्रमुख कवियों का परिचय दीजिए । *16*

4. एक कृति के रूप में 'प्रिय प्रवास' की चर्चा कीजिए । *16*

5. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में निहित इतिहास बोध और मानवतावादी दृष्टिकोण को रेखांकित कीजिए । *16*

6. 'छायावाद का विकास' विषय पर एक निबन्ध लिखिए । *16*

7. जयशंकर प्रसाद के रचना संसार पर प्रकाश डालिए । *16*

8. निराला के रचना विधान की संक्षिप्त चर्चा कीजिए । *16*

9. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

(क) रामनरेश त्रिपाठी

(ख) पंत और प्रकृति

(ग) भारतेन्दु हरिश्चंद्र की भाषा

(घ) महादेवी वर्मा और उनकी रचनाएँ